दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 64 ❑ अंक-19 ❑ दिल्ली ❑ जुलाई (प्रथम) ❑ मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
सम्मान के बढ़ते चरण

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलित साहित्य का अभिवृद्धि के लिए और दलित लेखकों, दलित साहित्यकारों तथा दलित साहित्य में विश्व–व्यापक प्रसार करने के इच्छुक अभ्यार्थियों की इच्छापूर्ति के लिए दलित साहित्य के मैट्रिक, बी.ए. व एम.ए. हिन्दी के समकक्ष निम्नलिखित तीन कार्यक्रम कोर्स प्रारम्भ करने जा रहा है।

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स
2. दलित साहित्य भूषण कोर्स
3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स यह हिन्दी की मैट्रिक सर्टिफिकेट कोर्स होगा और इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य रत्न'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

2. दलित साहित्य भूषण कोर्स यह हिन्दी के बी.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद अभ्यार्थी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी **'दलित साहित्य भूषण'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स यह हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य प्रभाकर'** उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

ये तीनों कोर्स दलित साहित्य की अभिवृद्धि और लोगों की दलित साहित्य में अभिरुचि अभिवृद्धि के लिए संचालित किये जा रहे हैं। इनका किसी को कोई नौकरी दिलाने का प्रमाण नहीं होगा। अभ्यार्थी उपरोक्त दलित साहित्य कोर्स पास करने के बाद इस प्रमाण पत्र को अपनी योग्यता के साथ जोड़ सकेगा।

उपरोक्त तीनों परीक्षा में परीक्षा शुल्क निःशुल्क है पर कोर्स से सम्बन्धित दलित साहित्य पुस्तकें मंगाने के लिए शुल्क देना होगा।

<u>दलित साहित्य रत्न कोर्स</u>

1. दलित साहित्य सम्बन्धी कोई एक लेख निम्न विषय पर भेजना होगा–
   1. मैं और मेरा परिवार
   2. मैं और मेरा समाज
   3. मैं और मेरा गांव
   4. मैं और मेरा देश
2. बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा था–गांव जात–पांत के दडबे हैं जो व्यक्ति पैदा होता है, वहीं से वह बाहर नहीं निकल सकता। वहीं वह जीता है और वहीं वह घुट–घुटकर मर जाता है। आप बाबा साहब डा. अम्बेडकर की इस युक्ति से कहां तक सहमत हैं? उस पर अपने विचार लिखें।
3. दलित साहित्य दलितोत्थान साहित्य है, इसका किसी जाति, भाषा, प्रदेश से सम्बन्ध नहीं, पर दलित साहित्य इन सबसे विमुक्त है। आप इससे कहां तक सहमत हैं? अपने विचार लिखें।
4. भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलितोत्थान के लिए और ब्राह्मणवादी मनु वर्ण व्यवस्था के खिलाफ सबसे पहले शंखनाद किया था और इसमें वह काफी हद तक सफल हुआ है। इससे आप कहां तक सहमत हैं? अपने विचार लिखें।
5. दलित साहित्य ने लोगों में जनजागृति और जन चेतना जाग्रत की है। अब दलित समाज का हर व्यक्ति मनु की वर्ण व्यवस्था, जातपांत, ऊंच–नीच, भेदभाव, भाग्य–भगवान, धर्म–कर्म, और भाग्य भगवा की झूठी थ्योरी को समझने लगा है और इसके प्रति सजग होकर दलित समाज को इससे मुक्ति दिलाने में जुटा है। इससे आप कहां तक इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखें।

<u>दलित साहित्य भूषण कोर्स</u>

'दलित साहित्य भूषण' कोर्स हिन्दी के बी.ए. के समकक्ष होगा। इस कोर्स को उत्तीर्ण करने के बाद आप दलित साहित्य के मर्मज्ञ हो जायेंगे और दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए दलित समाज के अन्य शिक्षित लोगों को भी प्रेरित कर सकेंगे। इसके बाद दलित साहित्य भूषण उपाधि को आप अपने नाम के साथ लगाकर समाज में गर्व महसूस करेंगे क्योंकि अभी तक किसी भी ब्राह्मणवादी संस्थान ने आपको सम्मानित करके सम्मान नहीं दिया है। दलित समाज जो

(शेष भाग... पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

गतांक से आगे–3

अगर अपनों ने धोखा नहीं दिया होता और गांधी जी ने ना छला होता तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष तक जीवित रहते

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

बाबा साहब डा. अम्बेडकर को 'पूना पैक्ट' समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद यह अहसास हुआ कि महात्मा गांधी द्वारा आमरण अनशन के षड्यंत्र के तहत उन्हें छला गया है और हिन्दू नेताओं के भारी दबाव के कारण उनके साथ धोखा हुआ है जिस कारण से अब उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के अछूत–दलितों के उत्थान व कल्याण के लिए दिये 'कम्युनल अवार्ड' को लौटाने के अलावा और कोई चारा नहीं था। एक ओर उनके सामने महात्मा गांधी के प्राण बचाकर उन्हें जीवन दान देने की मजबूरी थी, वहीं दूसरी ओर 'कम्युनल अवार्ड' लौटाकर गांधी जी के साथ 'पूना पैक्ट' कराने का भारी दबाव था। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को 'कम्युनल अवार्ड' छोड़कर गांधी जी के साथ 'पूना पैक्ट' करना पड़ा, जिसके तहत भारत के अछूतों को निर्वाचन में मिले दो वोट देने के अधिकार और पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाने के अधिकार को छोड़कर निर्वाचन, शिक्षा संस्थान, सरकारी नौकारियों में उनकी आबादी के अनुपात में आरक्षण देने का प्रावधान था। बाबा साहब को मजबूरन 'पूना पैक्ट' को स्वीकार करने से बहुत आघात लगा और उन्हें लगा कि उन्हें आमरण अनशन व पूना पैक्ट के नाम पर छला गया है। अब उनके सामने दुविधा भी थी कि इंग्लैंड की राउंड टेबुल कान्फ्रेंस में अंग्रेजों के साथ लड़कर भारत के दलितों के कल्याण के लिए जो 'कम्नुयल अवार्ड' पाया था, अब उसे लौटा कर क्या वे अब अंग्रेजी सरकार से भविष्य में दलितोत्थान की बात कर सकेंगे?

पूना पैक्ट की शर्तों को अमल में लाने के लिए गांधी जी ने दलितोत्थान के लिए 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की और हिन्दू धर्म में सवर्ण जातियों व अछूतों के बीच भेदभाव की खाई को कम करने के लिए 'हरिजन' समाचार पत्र निकाला, सहभोज आयोजित किये, स्वयं उन्होंने हरिजन बस्ती में रहने का ढोंग रचा, छुआछूत को दण्डनीय करार और अधर्म व महापाप माना पर गांधी जी की लाख कोशिशों के बावजूद सवर्ण हिन्दुओं का दिल नहीं पसीजा। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने गांधी जी और उनके हिन्दू नेताओं के हृदय परिवर्तन को एक ढोंग और ढकोसला मानते हुए गांधी जी को उनके आमरण अनशन, पूना पैक्ट और सनातन हिन्दू धर्म की पोल खुलने के लिए हिन्दू धर्म छोड़ने का मन बना लिया। इसलिए 1935 में महाराष्ट्र के येवला अछूत महासम्मेलन में 'पूना पैक्ट' के 3 वर्ष बाद यह घोषणा की कि ''जिस हिन्दू धर्म में मैं पैदा हुआ हूं उसमें पैदा होना मेरे हाथ में नहीं था, पर हिन्दू धर्म में 'हिन्दू' रहकर मैं मरूंगा नहीं, यह मेरे हाथ की बात है।''

बाबा साहब डा. अम्बेडकर की हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा से गांधी जी और उनके हिन्दू नेता तिलमिला उठे कि अम्बेडकर के

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय पेज 1 का शेष....अगर अपनों ने धोखा नहीं दिया होता और गांधी जी ने ना छला होता तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष तक जीवित रहते

साथ उसके अछूत दलित भाई हिन्दू धर्म छोड़ देंगे तो हिन्दू धर्म तो अल्पमत में रह जायेगा। उन्होंने बाबा साहब को हिन्दू धर्म नहीं छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की, पर बाबा साहब अपनी बात पर अडिग रहे क्योंकि 'पूना पैक्ट' व आमरण अनशन के नाम पर उन्हें जो छला गया था, उसका गहरा आघात ने गंभीर चोट दी थी। बाबा साहब उस चोट का जवाब भी गांधी जी को पत्थर से ही देना चाहते थे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने उनकी बात नहीं मानी तो गांधी जी और उनके हिन्दू नेताओं ने उन्हें बदनाम करना शुरू कर दिया कि अम्बेडकर अंग्रेजों के 'पिट्ठू' हैं, हिन्दू धर्म के विरोधी हैं और वह हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई धर्म अपना कर भारत को ईसाई देश बनायेंगे। बाबा साहब ने उनकी इन बातों का जोरदार खंडन किया।

ब्रिटिश सरकार बाबा साहब डा. अम्बेडकर और गांधी जी और उनके सनातनी हिन्दू नेताओं की स्थिति को समझती थी और वह यह भी जानती थी कि गांधी जी अम्बेडकर को बदनाम करके उन्हें अछूतों के मन में उनके प्रति घृणा भाव पैदा करना चाहते थे। 'कम्युनल अवार्ड' को लौटाने के गांधी जी के छल को वह अच्छी तरह समझती थी। वह उन्हें अब भी भारत के दलितों (अछूतों) का असली नेता मानती थी। डा. अम्बेडकर के येवला महासभा में हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा से वह भलीभांति परिचित थी। वह हिन्दू धर्म छोड़कर किस धर्म में जायेंगे, यह अभी तक स्पष्ट नहीं था। सभी धर्म गुरु उन्हें अपने अपने धर्म में लाने के लिए लालायित थे, पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने किसी को भी अपने मन की बात नहीं बताई।

भारत की ब्रिटिश सरकार बाबा साहब के व्यक्तित्व–कृतित्व तथा निर्भीकता से वाकिफ थी और जानती थी कि डा. अम्बेडकर ही भारत के अछूतों का उद्धार कर सकते हैं। इसलिए 1936 में उसने अपनी 'एक्जीक्यूटिव कौंसिल' में डा. अम्बेडकर को मेम्बर मनोनीत करके उन्हें श्रम मंत्री का दर्जा दे दिया। इससे गांधी जी और कांग्रेसी हिन्दू नेता उन्हें अपना दुश्मन मानते हुए उनका खुलकर विरोध करने लगे और 'देशद्रोही' कहकर बदनम करने लगे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने उनकी इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। वे देश के दलितों के उत्थान के कार्यों में जुटे रहे। इसी बीच बाबू जगजीवन राम जी का कांग्रेस नेता के रूप में नाम आगे आया तब तक बाबा साहब डा. अम्बेडकर का नाम भारत के अछूतों के दिलों में एकछत्र नेता के रूप में उभर चुका था।

इंगलैंड की राउंड टेबुल कान्फ्रेंस, कम्युनल अवार्ड व गांधी–अम्बेडकर पूना पैक्ट के कारण डा. अम्बेडकर का नाम दलितों के दिलों में एकमात्र दलित नेता के रूप में छा चुका था। महात्मा गांधी ने डा. अम्बेडकर की एकमात्र दलित नेता की छवि को खत्म करने के लिए बाबू जगजीवन राम को तरजी देना शुरू किया। उन्हें अछूतों के नेता के रूप में गांधी जी ने कांग्रेस में प्रमुख स्थान देना शुरू किया, पर बाबू जगजीवन राम तो डा. अम्बेडकर के कार्यों से प्रभावित थे और उनके दिल में भी डा. अम्बेडकर के प्रति अद्‌भुत सम्मान था। इसलिए वह डा. अम्बेडकर को नीचा दिखाने से बचते रहे।

अन्ततः अंग्रेजी हुकूमत ने भारत की आजादी के आन्दोलन के सामने घुटने टेक कर भारत को आजाद करने की घोषणा कर दी, पर इससे पूर्व भारत का संविधान प्रस्तुत करने की मांग रख दी। इसके लिए संविधान सभा का गठन किया गया और सभी प्रान्तों का प्रतिनिधित्व इसमें रखा गया। बाबा साहब डा. अम्बेडकर बंगाल से इस संविधान सभा में चुनकर आने वाले थे, पर गांधी जी और उनके कांग्रेसी नेताओं ने वहां के जिलों को काट कर बटवारे के बीच पाकिस्तान के हिस्से में दे दिया गया। बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी व उनके कांग्रेसी नेताओं की दुर्भावना को जानते थे क्योंकि गांधी जी कभी नहीं चाहते थे कि डा. अम्बेडकर भारत के संविधान सभा के सदस्य बनें। पर धन्य हैं प्रो. जोगेन्दर दास मण्डल, जिन्होंने अपने साथियों के सहयोग से अथक परिश्रम करके बंगाल के दूसरे जिलों से बाबा साहब डा. अम्बेडकर को जिताकर भारत की संविधान सभा में चुनकर भेजा। इससे गांधी जी और उनके कांग्रेसी नेताओं को जोरदार धक्का लगा जो अम्बेडकर को संविधान सभा में सदस्य के रूप में चुनकर भेजने में कामयाब नहीं हुए। भारत की संविधान निर्माण सभा का सदस्य चुने जाने पर देश के अछूतों के अन्दर जोरदार खुशी की लहर दौड़ गई, पर वे गांधी जी व उनके कांग्रेसी नेताओं की इस तरह पोल खुल जाने से अचम्भित थे जो अछूतों के नाम पर झूठ और दिखावे की राजनीति कर रहे थे।•

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे अब यह आन लाईन 'यू-ट्यूब' पर उपलब्ध है। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसके लिए आप वार्षिक शुल्क 500/- Payphone पर भेज सकते हैं।

सम्पादक :

हिमायती

बी 3/9, दूसरी मंजिल,

माडल टाउन-1, दिल्ली-9

मो. 9810278936, 9891989175

पृष्ठ 1 का शेष...भारतीय दलित साहित्य अकादमी : सम्मान के बढ़ते चरण

सदियों से सम्मान की लड़ाई लड़ रहा है, उसकी क्षतिपूर्ति में यह एक विशेष कदम होगा।

दलित साहित्य भूषण कोर्स दलित साहित्य पर आधारित होगा जिसमें अद्यतन दलित साहित्य और उनका अभी तक प्रकाशित दलित साहित्य से सम्बन्ध होगा।

दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स

यह दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा जो दलित साहित्य की सर्वोच्च उपाधि के रूप में होगा। यह कोर्स दलित साहित्य के समग्र ज्ञान पर आधारित होगा। भारतीय भाषाओं में जहां भी दलित साहित्य छिपाया गया है, विनष्ट किया गया है या अन्य नाम से भाषित किया गया है, वह कोर्स का विशेष अंग होगा।

दलित साहित्य महाकाव्य रामायण, महाभारत, उत्तर रामचरित मानस व भगवत गीता–यहां के नायक नायिका व उनके पराक्रम, वीरता–शूर वीरता से भरपूर है। इसी क्रम में अद्यतन खोजों में प्राप्त विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों और इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियों से अभिभूत है।

दलित साहित्यकार और उनकी रचनायें, दलित राजा, महाराजा और उनकी उपलब्धियां, दलित समाज सुधारक और उनकी उपलब्धियां, दलित संत, महात्मा महर्षि और समाजोत्थान में योगदान, दलित साहित्य और उनके वीर–वीरांगनायें व उनकी उपलब्धियां, दलित साहित्य के प्रेरक और उत्थान व स्थापितकर्त्ता, दलित साहित्य का सामाजिक परिवर्तन में योगदान, दलितों का राष्ट्र निर्माण में योगदान, दलितों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, कलाओं में योगदान। दलित साहित्य में अभिन्न अंग है।

वास्तव में पृथ्वी शेषनाग के सिर पर नहीं बल्कि दलितों के सिरकन्धों पर टिकी है जिसने इसका नवनिर्माण तो किया ही है, इस निरन्तर अपनी मेहनत व श्रम से स्थायी व सुदृढ़ बनाया है और उसी धरती से पूर्णतः सम्बन्धित है दलित साहित्य और जो दलित साहित्य में पारंगत होगा, वही होगा दलित साहित्य का प्रभाकर सूर्य–शाशवत प्रकाश देने वाला और प्राणी जनों को निरन्तर नवजीवन प्रदान करने वाला।

दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स दलितों में सम्मान तो भरेगा ही, साथ ही आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स का विशेषज्ञ, पारंगत पंडित बनने के लिए दलित साहित्य की निम्न धारा का ज्ञान अनिवार्य होगा।

दलित साहित्यकार, दलित शूरवीर व दलित वीरांगनाएं

प्रथम दलित साहित्यकार–महर्षि वाल्मीकि–आदिग्रन्थ–रामायण तथा उत्तर रामचरितम्।

महर्षि व्यास–आदिग्रन्थ–महाभारत एवं श्रीमद्भगवत गीता एवं 18 पुराण

आदि हिन्दी कवि–श्री गुरु रविदास एवं सद्गुरु कबीर

रामायण महाकाव्य में वर्णित दलित पात्र

1. सीता 2. उर्मिला, 3. केकैयी, 4. मंथरा 5. राम, 6. लक्ष्मण, 7. भरत 8. शत्रुघ्न, महाराजा दशरथ एवं श्रवण कुमार, कौशल्या 9. सूपर्णनखा 10. भीलनी 11. मारीच 12. बाली 13. सुग्रीव 12. अंगद 13. हनुमान 14. रावण 15. कुम्भकरण 16. मेघनाथ 17. मन्दोदरी 18. नल–नील 19. शंबूक ऋषि।

महाभारत महाकाव्य में वर्णित दलित पात्र

1. एकलव्य 2. सूतपुत्र कर्ण 3. अर्जुन 4. भीम 5. सहदेव, नकुल, युधिष्टर, दुर्योधन, धृतराष्ट्र, गांधारी, कुन्ती, गुरु द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य, पाण्डु (पांडव), द्रोपदी, सत्यवती, सत्यवान, श्रीमद् भगवत गीता।

गीता उपदेश–श्रीकृष्ण व अर्जुन संवाद, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, द्रोपदी स्वयंवर, लाक्षागृह।

हमारे दलित नायक

गुरु रविदास, सद्गुरु कबीरदास, गुरु घासीदास, गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, रंगरुटा–बाबा जीवन सिंह, लखिया बेजरा, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर', मुन्शी हरि प्रसाद टम्टा, बाबू मंगूदास, बाबा साहब डा. अम्बेडकर, बाबू जगजीवन राम, बाबू परमानन्द, डा. सूरजभान, डा. माता प्रसाद, महर्षि दयानन्द।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की दलित साहित्य की स्थापना, उसकी सीमा और सम्वर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अकादमी ने अपनी स्थापना के गत 40 वर्षों में जहां पुरातन दलित साहित्य को नये दलित साहित्य की रूपरेखा और सीमा में लाकर और सभी विधाओं में दलित साहित्य निर्माण कराकर कालेज व विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थापित किया और उस पर एम.फिल, पी.एच.डी. शोध कार्यक्रमों के अन्तर्गत शामिल करके दलित साहित्य पर शोध कराने में अद्भुत कार्य किया है जिसकी बदौलत आज देश–विदेश में सभी भाषाओं व सभी विषयों व विधाओं दलित साहित्य की रचना की जा रही है। आज स्कूल, कॉलेज के पुस्तकालय दलित साहित्य से भरे पड़े हैं। रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत के रचनाकार महर्षि व्यास को दलित साहित्य का 'आदिकवि' का सम्मान भी अकादमी की देन है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने ही सबसे पहले बाबा साहब डा. अम्बेडकर के नाम पर डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की, उन्हें 'भारतरत्न' दिये जाने की मांग की और डा. अम्बेडकर जन्म शताब्दी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने तथा डा. अम्बेडकर फाउंडेशन बनाने पर उनके सभी लेखों व रचनाओं का अनुवाद करके देश के सभी भाषाओं में प्रकाशित करने की मांग भारत सरकार से की थी। प्रधानमंत्री वी. पी. सिंह के कार्यकाल में अकादमी की इन मांगों को स्वीकार कर उन्हें साकार रूप दिया गया। जो भारतीय दलित साहित्य अकादमी के लिए गौरव और स्वाभिमान की

बात है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी अब तक 41 राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन, 2 विश्व दलित साहित्यकार सम्मेलन तथा हजारों प्रादेशिक सम्मेलन व जिला सम्मेलन आयोजित कर चुकी है। उनके द्वारा दलित साहित्य का नाम व कार्य की ख्याति व पहचान राष्ट्रीय स्तर व विश्व स्तर पर हुई। आज अकादमी व दलित साहित्य किसी के पहचान की मोहताज नहीं है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के दलित साहित्य को शिखर तक पहुंचाने के पीछे जहां एक सशक्त निष्ठावान लोगों की टीम है जो दृढ़संकल्प के साथ निस्स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य पूर्ति में जुटे रहते हैं, वहीं उसके अभिन्न अंग के रूप में **'हिमायती'** हिन्दी पाक्षिक और **बेगमपुरा टी. वी. चैनल** गत वर्षों से दलित साहित्य आन्दोलन की पताका को देश–विदेश में फहरा रहे हैं जिससे जन जन व हर घर तक दलित साहित्य का नाम, काम, पहचान उनके हृदय में छाये हुए हैं।

दलित धरोहर स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर', बाबा मंगूदास, मुंशी हरि प्रसाद टम्टा, बाबू जगजीवन राम, भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर को जन–जन के हृदय सम्राट बनाने वाली अकादमी ही है। महात्मा जोतीबा फुले, वीरांगना सावित्रीबाई फुले, वीरांगना झलकारीबाई, श्रीमती फातिमा शेख के महान कार्यों को उजागर करने वाली अकादमी ही है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के निर्देशन में वैसे तो हजारों पुस्तकें दलित साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न विधाओं और विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं, पर अकादमी द्वारा प्रकाशित निम्न पुस्तकें काफी लोकप्रिय व प्रशंसनीय हुई हैं–

1. दलित साहित्य वार्षिकी 2. हूज हू आफ दलित राईटर्स, आफ इन्डिया, 3. बुद्धा टू अम्बेडकर, 4. हूजहू–इन्टरनेशनल एंड नेशनल अवार्डीज आफ बी.डी.एस पार्ट–1 एंड हूजहू– इन्टरनेशनल एंड नेशनल अवार्डीज पार्ट–2, 6. भारतीय दलित साहित्य अकादमी–राष्ट्रीय सम्मेलन स्मारिका–1–41, 7. सिन्धु घाटी के सृजक–शूद्र व वणिक, 8. नागवंश, आदिमजाति–चमार, 9. युगपुरुष बाबू जगजीवन राम 10. सिन्धु घाटी बोल उठी 11. अब नहीं रहेंगे हाशिये पर, 12. अन्धा समाज–बहरे लोग, 13. विश्वविभूति–डा. अम्बेडकर, 14. भारत की गुलामी के 22 सौ साल।

भारतीय दलित साहित्य अकादमीने हमेशा विद्धता का सम्मान किया है। दलित साहित्य, कला के क्षेत्र में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को डा. अम्बेडकर, महात्मा जोतीबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले, वीरांगना झलकारी बाई आदि के नामों पर स्थापित अवार्डों से सम्मानित किया है। जो लोग दलित साहित्य के मर्मज्ञ हैं, उन्हें 'प्रोफेसर' की मानद उपाधि से सम्मानित किया। ऐसे ही जिन लोगों ने धार्मिक क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता प्रगट की, उन्हें 'आचार्यश्री' मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसी क्रम में अकादमी दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए दलित साहित्य सेवा में संलग्न विद्वानों को दलित साहित्य रत्न, दलित साहित्य भूषण, दलित साहित्य प्रभाकर सर्टिफिकेट कोर्स संचारित कर रही है जो दलित साहित्य में ज्ञान, विशेषज्ञता व रुचि के आधार पर मूल्यांकन करके मानद उपाधि से सम्मानित करेगी। इस मानद प्रमाण पत्र प्राप्ति के बाद वह विशेषज्ञ विद्वान नाम के साथ सगर्व लिख सकेगा। रत्न, भूषण, प्रभाकर उपाधि के लिए परीक्षा पत्र भरकर परीक्षा में भाग ले सकेगा। उसकी विद्वता को अकादमी उचित सम्मान प्रदान करेगी। •

दलित समाज की धुरी रविदास समाज

• रामचन्द्र दहमा

आओ हम सब इन्हीं सभी तथ्यों पर अध्ययन करेंगे कि क्या रविदासी दर्शन की विचारधारा इस रविदासी समाज के हित में शत प्रतिशत रास आ रही है या नहीं? जो आप अपने मन में संजोय हुए हैं और उन सभी धारणाओं को एक विशेष जाति समूह के लिए नहीं अपितु बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के सम्बन्ध में मेल खाती हो तथा सामाजिक प्रगति के साथ– साथ राष्ट्र विकास की भी प्रतीक हो, जैसे – संत कबीर ने अपने उस समय के समाज की एकता के लिए अपने शब्दों में पेश किया है

माटी एक सकल संसारा,
बहुविध भांडे घड़े कुम्हारा।
एक बूंद एक मल मूतर,
एक चाम एक गूदा।
एक जोत से सबै उत्पन्न
कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।

इसी संत श्रृंखला की अग्रिम पंक्ति में संत रविदास, संत तुकाराम, गुरु गोरक्षनाथ व नानक देव जी जैस सन्त ही अपना स्थान बना पाए हैं। इन सन्तों की विचारधारा को लेकर ही उनके अनुयायी, उसी पन्थ की विचारधाराओं का प्रचार करते हैं जैसे सन्त कबीर के अनुयायी कबीर पन्थ को, सन्त रविदास के रविदासी पन्थ, सन्त तुकाराम बारकारी गुरु गोरक्षनाथ के नाथ पन्थ और गुरु नानक देव के अनुयायियों अपने को सिक्ख पन्थ (अब धर्म) को। अब पन्थों का स्थान वाद ने ले लिया जैसे– लोहियावाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद, अम्बेडकरवाद एवं माओवाद आदि हैं।

आज का हमारा मूल विषय केवल रविदासी समाज को लेकर है। आप इस तथ्य से भली भांति परिचित हैं कि आज का रविदासी समाज दो भिन्न विचारधाराओं को लेकर चल रहा है।

एक तो हिन्दू धर्म की पौराणिक संस्कृति तथा दूसरी वैज्ञानिक दर्शन की श्रमण संस्कृति हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक संस्कृति अपने से रहित किसी अन्य शक्ति को विश्व

का कर्ता–धर्ता मानती हैं। इसी संस्कृति के अन्तर्गत गुरु की कौड़ी को गंगा द्वारा अपने हाथ से लेने के लिए जल में प्रकट होना और कौड़ी के बदले ब्राह्मण को कंगन देना, शालिग राम की मूर्ति का पानी में तैरना, झाली रानी द्वारा ब्राह्मण भोज में, गुरु रविदास का ब्राह्मण भोज से उठकर चले जाने के बाद भी, हर ब्राह्मण के साथ सन्त रविदास जी का भोजन करना, अपने स्वयं को रविदास जी द्वारा सात जन्म से लगातार ब्राह्मण होने का शरीर चीर कर ब्राह्मण सिद्ध करने के लिए जनेऊ का दिखाना आदि–आदि।

वैज्ञानिक श्रमण संस्कृति में अपने आपको ऐसी स्थिति में ले जाया जाना है कि वह स्वयं को ही अपने को कर्ता–धर्ता यानि अर्थात् "अतो दीपो भव'' और स्वर्ग नरक के रहस्यवाद को नकार दे क्योंकि इस रहस्यवाद ने ही सिद्धार्थ को छः वर्ष की कठोरतम तपस्या में उलझाए रखा था जिनको हम तथागत गौतम बुद्ध के नाम से जानते हैं और इस रहस्यवाद से छुटकारा पाने के बाद ही वह 'बुद्ध' कहलाए और मानव समाज को मध्य मार्ग की रास्ता बताया जो किसी अन्धविश्वास और मुक्ति की चाह में धार्मिक काण्डों किए जाने को बिल्कुल नकारता है।

अब हम वैज्ञानिक श्रमण संस्कृति के आधार पर गुरु रविदास के दोहों का आकलन करेंगे, जो इस प्रकार से है –

पराधीन को दीन क्या,
पराधीन बेदीन,
रविदास पराधीप को
सभी समझे हीन।
पराधीनता पाप है,
जान लियो रे मीत,
रविदास दास पराधीन को
कौन करे हैं प्रीत ?
रविदास ब्राह्मण न पूजिय,
जो होवे गुण–हीन।
पूजिए चरण चाण्डाल के,
जो होवे गुण प्रवीन।।
ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिले सबन को अन्न।।
छोटे बड़े सब सम रहें,
रविदास रहे प्रसन्न।।

तभी तो गुरु रविदास के उपयुक्त दोहे को लेकर जोशीले नौजवान कहते हैं–''अधिकार मांगने से नहीं मिलते छिनने जाते हैं''। उनका ऐसा कहना कहीं तक उनको उचित भी लगता होगा। कारण स्पष्ट है कि गुरु रविदास जी ने कहीं भी यह नहीं कहा–'ऐसा राज दे मेरे प्रभु जिससे मिले सबन को अन्न' अर्थात् गुरु जी ने न ही तो ऐसी विनती तुलसीदास के 'राम' दशरथ के पुत्र से की और नहीं श्री कृष्ण भगवान से की। यदि हम सूरदास जी के इस दोहे को 'चरण कमल बन्दों हरिराई, जिनकी कृपा से पंगु गिरि लांगे, रंक चले सिर छत्र धराई।।' की सार्थकता को मान ले तो इस प्रभु के लिए रविदास जी की कल्पना का राज्य स्थापित करना कोई कठिन कार्य नहीं है।

लेकिन बड़ा खेद का विषय है जब इन नौजवानों से कोई यह पूछता है कि भाई अधिकार छीनने के लिए गुरु के कौन से दर्शन के मापदण्ड अपनाने पड़ते हैं, तो तब वे कुछ नहीं कह पाते, जब इससे और आगे इन नौजवानों से यह पूछते हैं कि क्या गुरु रविदास का दोहा – ऐसा चाहूं राज मैं.... के इस दोहे में कार्ल मार्क्स का साम्यवादी बीज तो नही छुपा हुआ है? तो इस पर वे बंगले झांकने लगते हैं और यह कहकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं कि हमने ऐसा सुना है कि बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर ने साम्यवाद को नहीं अपनाया था और वे इस तरह से रविदासी न होकर, अम्बेडकरवादी बन जाते हैं। ऐसे नौजवानों को यह मालूम होना चाहिए कि गुरू रविदास का यह वैज्ञानिक दर्शन बुद्ध की वाणी 'धम्म' से पूरी तरह से प्रभावित था, क्योंकि गुरू रविदास ने भी वेदों के किसी कर्म काण्ड को नहीं माना जैसे गुरू रविदास के बारे में कहते हैं–

'चारों वेदों को किया खण्डोति,
जहां विप्र करे दण्डोति।'

विश्व के प्रथम सामाजिक क्रान्तिकारी महामानव बुद्ध के सन्देश, धम्म चक्र प्रवर्तनाय, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, अर्थात् समता, स्वतन्त्रता तथा बन्धुता का था।

बुद्ध के संदेश में किसी तरह की तानाशाही को स्थान नहीं है, बाबा भीमराव डा. अम्बेडकर ने भी कहा था–''वर्ग विहीन समाज की स्थापना के बिना स्वतन्त्रता का कोई महत्व नहीं।'' आज हमें वैचारिक परिवर्तन की आवश्यकता है जो व्यवस्था परिवर्तन का दूसरा रूप है क्योंकि चेतना ऊंची हो जाने पर मनुष्य को कानून की छड़ी से हांकने की आवश्यकता नहीं, लेकिन शिक्षा के बगैर चेतना का विकास नहीं। अब आप प्रबुद्ध जनों ने स्वयं निर्णय करना है कि गुरू रविदास के दर्शन के आधार पर अपने रविदासी समाज माने या गुरू रविदास का जन्म इस जाति समूह में लेने के कारण और इस रविदासी समाज को एक छाते के नीचे कैसे लाया जाये मेरे आपने विचार में यदि आप गुरू रविदासी समाज को गुरू रविदास के वैज्ञानिक दर्शन श्रमण संस्कृति यानी बौद्ध संस्कृति को लेकर रविदासी समाज को एक छाते के नीचे लाने की बात करते हैं तो फिर आपने 90 प्रतिशत इस समाज के उन लोगों से जुझना पड़ेगा जो इस बात को मानते हैं कि जो भी कुछ है वह यह सब इन के पिछले कर्मों का फल मात्र है। इस सोच के लोग मनुवादी वर्ण व्यवस्था की संरचना के दोष की तो बात ही नहीं करते हैं।

डा. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के साथ जो व्यवहार बड़ौदा महाराज की सेवा काल में उनके साथ हुआ और पारसी धर्मशाला से आधी रात को उनका सामान बाहर फैंक देने से वह कितने आहत हुए थे। महाड़ के तालाब से 20 मार्च 1927 को पानी लेने और नासिक (पंचवटी) के काला राम मन्दिर प्रवेश के लिए किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। उनके जीवन में घटी घटनाओं के फलस्वरूप ही तो उन्होंने इस शोषित समाज के मानवीय अधिकारों की लड़ाई लन्दन में 'राउन्ड टेबल

आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

कान्फ्रेन्स' में लड़नी पड़ी थी। वे शोषितों को मुक्ति की लड़ाई लड़ रहे थे। वह महात्मा गांधी और तिलक की स्वराज्य की लड़ाई से भी यह बड़ी लड़ाई थी जिसके फलस्वरूप ही आज हम मानव धारा में आ सके हैं।

इतना सब कुछ जानते हुए आज हम भय, भ्रम और भ्रान्ति के पचड़े में पड़कर पिछले कई वर्षों से अन्धविश्वास में रूढ़िवादी कर्म काण्डी में फंसते जा रहे हैं जिनसे महात्म ज्योतिराव फुले, बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर ने आपको छुटकारा दिलाने का प्रयास किया था। लेकिन क्या करें ऐसे लोगों की यह पक्की सोच बनती जा रही है कि यह कर्मकाण्डी ब्राह्मण स्वयं भगवान है, इनके आशीर्वाद से सब मनोकामनायें पूरी हो सकती हैं। आम आदमी की तो बात ही क्या स्वयं स्वर्ग के देवी–देवता भी इनके सामने झुकते हैं। मनुष्य और देवताओं के यही मुक्ति दाता हैं। इनके श्राप से सभी देवी–देवता तक डरते हैं।

मृतक मां बाप की सत्तहरवीं (मृत्यु भोज) पर हजारों रूपये खर्च कर डालते हैं। मृतक स्वजनों (पित्तरों) से पिण्ड इन पंडे पुजारियों के सिवाय कोई अन्य पिन्ड नहीं छुड़ा सकता। गया के तीर्थ स्थान का श्राद्धों में क्या कुछ महत्व है और वहां क्या कुछ होता है वह आप लोगों को पता ही है। कार्तिक स्नान के अवसर पर छत्रपति साहू जी को अपने ही पुजारी के व्यवहार से कितना अपमानित होना पड़ा था। पुजारी ने उनका क्षत्रिय होने से भी साफ इनकार कर दिया था। ये सब पुस्तकों में लिखा हुआ पाते हैं। इस समाज के लिए गुरु रविदास जी तथागत गौतम बुद्ध एवं बाबा साहब डा. अम्बेडकर की चेन की बीच की कड़ी है, मानकर चलने पर ही हमारा इस रविदासी समाज का उत्थान हो सकता है। इस गुरू रविदासी समाज की उन्नति के लिए कुछ सुझाव निम्न प्रकार से हैं–

1. सामूहिक विवाहों का अग्रवाल समाज की तरह युवक युवती परिचय सम्मेलन का प्रचलन किया जाये तथा दान–दहेज और सब प्रकार की नशाखोरी से बचा जाये।

2. धार्मिक कर्मकाण्डों में पंडे पुजारियों को दान दक्षिणा देना बन्द किया जाये, क्योंकि इन पंडे पुजारियों की दान दक्षिणा की अपार धन सम्पति मन्दिरों में संचित होने के कारण ही महमूद गजनवी ने भारत भूमि पर अनेकों मन्दिरों का बुरी तरह लूटा जिसमें सोमनाथ के मन्दिर की लूट विश्व प्रसिद्ध है। धार्मिक कर्मकाण्डों के कारण ही छत्रपति शिवाजी, अहिल्याबाई होलकर, शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह, बंगाल की रानी रासमणी आदि का राज्य कोष खाली हो गया था। शिवाजी ने तो अपने राजतिलक के समय पुरोहितों को बहुत दान दक्षिणा दी थी जिसमें तिलक कर्त्ता पुजारी को भारी रिश्वत देना भी सम्मिलित है। लेकिन तिलक कर्त्ता ने इतनी धनराशी लेने के बाद भी शिवाजी का तिलक अपनी पैर के अंगूठे से किया था। और शिवाजी का मुंह अपने पैर से ढक लिया था क्योंकि वह शूद्रवर्ण का था। धार्मिक अन्धविश्वास का ही नतीजा था कि भरतपुर के जाट महाराजा दिल्ली के गद्दी पर नहीं बैठ पाया, जिसके फलस्वरूप भारत ने अंग्रेजों की 183 वर्ष तक की और गुलामी झेलनी पड़ी। घटना का थोड़ा सा विवरण इस प्रकार है– भरतपुर के महाराजा सूरजमल की पत्नि महारानी किशोरी देवी ने हाथी पर चढ़कर अपने भाई बलराम की मदद से दिल्ली का दरवाजा तोड़ा था, बेटे जवाहर सिंह एवं सुयोग्य प्रधान सेनापति समरू के समर संचालन से दिल्ली को विजय कर लिया था। महाराजा जवाहर सिंह गद्दी पर बैठने वाला ही था तब ब्राह्मणों ने उनको बहका दिया और कहा महाराजा यह मलिच्छों की उच्छिष्ठ गद्दी है। आपको शोभा नहीं देती और इस तरह से यह जाट राजा भारत का सम्राट बनने से वंचित रह गया। आज कम से कम 95 प्रतिशत वही जाट जाति वैज्ञानिक सोच की पक्षधर है। और आगामी उन्नति के लिए राह टटोलती है। जाटों को वैज्ञानिक सोच सम्भवतः ही देश एवं समाज की उन्नति की ओर एक अच्छा कदम है।

3. सरकार के तीनों अंग, विधान पालिका, कार्य पालिका, न्याय पालिका में जनसंख्या के आधार पर समानापतिक सह भागीदारी सुनिश्चित की जायें।

4. सेना के तीनों अंगों में भर्ती की खुली हो अथवा समानुपातिक रूप से भागीदारी की रैजिमेंट बनाई जावे अन्यथा जातीय रेजीमेन्टों के स्थान पर योग्यता के मापदण्डों के आधार पर भर्ती की जाये।

4. आजीविका अर्जित करने के लिए प्राकृतिक सम्पदा (कृषि भूमि) औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों में किसी एक वर्ग विशेष की बपौती (वर्चस्व) को खत्म किया जाये। संख्या के आधार पर सह भागेदारी सुनिश्चित हो।

5. प्रत्येक जिले तहसील स्तर पर जहां स्नातकोत्तर, तकनीकी एवं स्वास्थ्य संबन्धी शिक्षा संस्थान हों वहां पर निर्धन छात्रों के लिए मुफ्त छात्रावासों की सुविधा के साथ–साथ पुस्तकालयों की भी व्यवस्था की जाये आदि–आदि।•

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–
सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9
मो. 9810278936

समता सैनिक दल का इतिहास

• एल.आर. बाली

बाबा साहब डा. अंबेडकर द्वारा 13 मार्च, 1927 की स्थापित, अखिल भारतीय समता सैनिक दल उन लोगों द्वारा बनाया गया, ऐसा स्वतंत्र और अराजनीतिक संगठन है जो समाज में समता (बराबरी) चाहते हैं, लेकिन जिन्हें इनसे वंचित रखा गया है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था के शिकार अथवा ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोधी लोगों की ऐसी संस्था है जो सामाजिक समता के महान उद्देश्य से प्रेरित हैं, क्योंकि शूद्र कहे जाने वाले लोग, जोकि आज अनुसूचित जातियां, अनुसूचित जनजातियां, और पिछड़ी श्रेणियां कहलाते हैं, जातिवाद के सबसे ज्यादा और भयानक रूप में शिकार हुए। अतः ऐसे लोगों का इस संस्था में मुख्यतः होना स्वाभाविक ही है।

शूद्रों ने, विशेषतः अछूतों ने जब अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया, जातिवादी ने कई ओछे हथकंडे अपनाने शुरू किए, जब ये लोग अपने अधिकारों के लिए, जन–चेतना जागृत करने के लिए अथवा दुनिया को अपनी दुर्दशा, अपने साथ हो रहे अन्याय अत्याचार बताने के लिए इकट्ठे होते, कहीं कोई जलसा या कांफ्रेंस करते जातिवाद के गुर्गे व गुण्डे इनके जलसों में गड़बड़ी पैदा करके नेताओं द्वारा बात कहे जाने से पहले ही लोगों को तितर–बितर कर देते।

दल की अंबेडकरी आंदोलन में एक सशक्त भूमिका रही है. लेकिन आज समाज ने इस संगठन को करीब–करीब भुला ही दिया है, 20 जुलाई 1942 को मोहन नगर, नागपुर में आयोजित समता सैनिक दल के प्रथम अधिवेशन में बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा था, "यदि हम अपनी राजनीतिक गतिविधियां बगैर किसी बाधा व छेड़खानी के करते रहे हैं। तो इसका श्रेय हमारे स्वयंसेवी संगठन समता सैनिक दल को है। जिसकी शक्ति के कारण कोई हमारे काम में रूकावट पैदा नहीं कर सकता। हम इसके बहुत ज्यादा कृतज्ञ हैं।''

बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा समय–समय पर विविध राजनैतिक संगठन बनाए गए, जैसे 'डिप्रेस्ड क्लासिज फैड्रेशन', 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी', 'शैड्यूल कास्टम फैड्रेशन' तथा 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया' की स्थापना की संकल्पना। इसी के साथ–साथ उन्होंने 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'समता', 'जनता' तथा 'प्रबुद्ध भारत' इस प्रकार के समाचारपत्र शुरू किए, अध्ययन से हमें पता चलता है कि बाबा साहब ने समय–समय पर अपने राजनैतिक संगठनों के साथ– साथ समाचारपत्रों के नामों में भी परिवर्तन किया। किन्तु एक विशेष बात यह देखी जाती है कि इन सबसे पहले स्थापित 'समता सैनिक दल' के नाम में या इसके उद्देश्य और कार्यक्रम में परिवर्तन करने की उन्हें कभी भी आवश्यकता महसूस नहीं हुई। इसी से पता चलता है कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर अखिल भारतीय समता सैनिक दल को बनाए रखना कितना जरूरी समझते थे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने जब अछूतोद्धार का आंदोलन शुरू किया, इस दौरान मुंबई विधान मंडल में कुछ अछूत प्रतिनिधित चुने गए थे, यह प्रतिनिधि अछूतों की समस्याओं को सदन में रखने लगे थे, ज्ञानदेव धुवनाथ धोलप, आनंदराव सुर्वे तथा सीताराम केशवराव बोले ने अछूतों के उत्थान के लिए सदन में विभिन्न प्रस्ताव रखे थे। रायबहादुर सी.के. बाले ने 4 अगस्त 1923 को मुंबई विधान सभा में अछूत वर्ग के लिए सभी सार्वजनिक जलस्त्रोतों, नदी, तालाब, कुंओं से पानी भरने, धर्मशाला, शिक्षा संस्थान, न्यायालयों में मुक्त प्रवेश मिलने, अस्पताल और सरकारी दफ्तरों में बेरोकटोक प्रवेश मिलने का एक क्रांतिकारी प्रस्ताव रखा था, विधान मंडल द्वारा इस प्रस्ताव को पारित करके 11 सितंबर, 1923 को इसे संपूर्ण मुंबई राज्य में लागू करने के लिए आदेश पारित किया गया था।

20 जुलाई 1924 को मुंबई में डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने 'बहिष्कृत हितकारनी सभा' की स्थापना की थी। अछूतों में जागृति लाने के लिए बहिष्कृत हितकारणी सभा द्वारा जगह–जगह पर सभाएं ली जाती थी। डा. बाबा साहब अम्बेडकर के उपदेशों तथा विचारों से धीरे–धीरे अछूतों को उत्तेजना मिलने लगी और कुछ ही दिनों में आंदोलन की जड़ें मजबूत होने लगी।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा 1920 से अछूतोद्धार का कार्य अपने हाथ में लेने के बाद से अछूत समाज बाबा साहब डा. अम्बेडकर के नेतृत्व में संगठित होने लगा था, जैसे–जैसे अछूत लोग सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए एकत्रित होकर संघर्ष करने लगे, वैसे–वैसे धर्मान्ध हिन्दू तथा बाबा साहब के विरोधी लोग उनके विश्वास एवं संगठन को तोड़ने के लिए उन पर हमला करने और डराने–धमकाने के लिए गुण्डों का इस्तेमाल करने लगे। जैसे–जैसे अछूतों में जागृति आ रही थी वैसे–वैसे हिन्दू लोग गांवों तथा शहरों में इन्हें दबाएं रखने के लिए और अधिक प्रताड़ित करने लगे सभा–सम्मेलनों तथा जलसों में गड़बड़ी पैदा करने लगे।

कुलाबा जिला बहिष्कृत परिषद् का प्रथम अधिवेशन महाड़ में 19 तथा 20 मार्च, 1927 को आयोजित किया गया था बाबा साहब इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए कई दिन पूर्व से नियोजनपूर्वक कार्य कर रहे थे। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य महाड़ सत्याग्रह के माध्यम से अछूतों में जागृति पैदा करना था। बाबा साहब द्वारा 1920 से प्रारंभ किए गए अछूतोद्धार आंदोलन के समय से अभी तक के कार्यक्रमों को असफल बनाने के लिए धर्मान्ध लोगों द्वारा किए गए प्रयत्नों से वे अच्छी तरह से परिचित थे। इस स्थिति से निपटने के लिए ऐसे समय बाबा साहब को अपने वर्ग के सैंकड़ों मिलटरी से सेवानिवृत हुए सैनिक दिखाई दिए, बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय समाज में समता प्रस्थापित करने के लिए इन सेवानिवृत सैनिकों को संगठित होने का आह्वान किया। आह्वान करते ही इन सेवानिवृत सैनिकों को चुपचाप बैठे रहना उचित नहीं लगा। उन्होंने बाबा साहब जैसे सच्चे मार्गदर्शक की बातों का महत्व समझा तथा वह समाज में समता प्रस्थापित करने और सच्ची लोकसेवा के लिए इकट्ठा हुए।

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 Email-sumanakshar@ymail.com

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009